

उपसार्य (wie eben) adj. *woran man heranzutreten hat, herantreten kann* P. 3,1, 104, Sch.

उपसि loc. (nur in dieser Form) *im Schooss* Nīa. 6, 6. पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ठ आ RV. 5, 43, 7. आसीन उर्ध्वमुपसि तिणाति 10, 27, 13.

उपसिक्तं s. उपशिक्षितं.

उपसीर् (उ + सी) gaṇa परिमुखादि zu P. 4, 3, 58, Vārtt.

उपसुन्द (उ + सु) m. N. pr. eines Daitja, eines Sohnes von Nikumbha und jüngern Bruders von Sunda Sund. 1, 3. Hir. IV, 20. VP. 147, N. 1.

उपसूर्यक (von उप + सूर्य) n. *Hof um die Sonne* AK. 1, 1, 2, 34. 3, 4, 11, 99. H. 101.

उपसृष्ट 1) adj. s. u. सृष्ट mit उप. — 2) n. *Beischlaf* Tait. 2, 7, 32.

उपसृष्टैर् (von सिच् mit उप) nom. ag. *Zugiesser* VS. 30, 12.

उपसेचन (wie eben) 1) adj. *zugießend*: कोशासः RV. 7, 101, 4. — 2) n. a) *das Zugiessen, Begiessen*: इक्षुयूधरुपसेचनाय कम् RV. 10, 76, 7. Kāt. Çr. 8, 3, 35. Pīa. Gṛh. 3, 3. — b) *Zuguss, Brüh* A V. 11, 3, 13. Kāthop. 2, 25. Vgl. अनुपसेचन. — 3) f. °नी *Löffel oder Schale zum Giessen*: वेति त्रामुपसेचनी RV. 10, 21, 2. 103, 10.

उपसेन (von उप + सेना) m. N. pr. eines Schülers von Çākjamuni VJup. 33.

उपसेवक (von सेच् mit उप) adj. *huldigend, nachgehend*: परदारोप° Jāś. 3, 136.

उपसेवन (wie eben) n. *das Huldigen, Verehren*: धातृणाम् MBu. 3, 14677. परदारोप° M. 4, 134. übertr. auf leblose Dinge: *das Sichhingeben, Gebrauchen, Geniessen*: पायोपसेवन MBu. 3, 28. ह्योप° 1203. Suçr. 2, 457, 20. 438, 2.

उपसेवा (wie eben) f. *Dienst, Huldigung*; mit dem obj. compon.: रात्रोपसेवा M. 3, 64. परदारोप° 12, 7. परोप° MBu. 1, 5191. वृद्धाप° 13, 516. übertr.: विषयोप° M. 12, 32. धर्मोप° MBu. 2, 2577.

उपसेविन् (wie eben) adj. *huldigend, verehrend, eine Sache gern habend*: वृद्धापसेविन् M. 2, 121. R. 5, 36, 63. वृषलाभ्युप° M. 11, 43. ये हितं वाक्यमुत्सृज्य त्रिपरितोपसेविनः Pāñkāt. III, 208. Suçr. 2, 332, 11.

उपसोमै (उप + सोम) m. P. 6, 2, 194, Sch.

उपस्कार (von कर्, करोति mit उप) m. 1) *Zuthat, Zubehör, Geräte, Ausrüstung* Suçr. 1, 123, 16. मङ्गलालम्बनीयानि प्राणनीयान्युपस्कारान् R. 2, 63, 9. क्रीडार्थशाय्युपस्काराः 30, 44. सर्वोपस्कारद्रव्याणि Vet. 4, 6. सूचक्रोपस्कारः (रथ) MBu. 2, 2063. 14, 2316. ररत सा मो सरथं ह्योपस्काराणि (neutr.) च 8, 7234. *Hausgeräte* Jāś. 2, 193. पञ्च सूना गृहस्वस्य चुह्योपेय्युपस्कारः । काण्टनी चोदकुम्भश्च M. 3, 68. वक्रो भवति कृत्वायिं गृहकारो ह्युपस्कारम् 12, 66. मुसंस्क्रतोपस्कारा (स्त्री) 3, 150. संयतोपस्कारा Jāś. 1, 83. — 2) *Gewürz* AK. 2, 9, 35. H. 417. — Vgl. उपकरण.

उपस्कार (wie eben) m. *Ergänzung*: उक्तमेवार्थोपस्कारमाह Mallin. zu Ragh. 11, 48. वैशेषिकसूत्रोपस्कार Titel des Comm. von Çāṅkaramiçra.

उपस्कृत s. u. कर्, करोति mit उप.

उपस्कृति (wie eben) f. P. 8, 3, 5, Sch. wohl = उपस्कार.

उपस्तम्भ (von स्तम्भ् mit उप) m. *Stütze, Anregung*: मूपिकवल्लोपस्तम्भेन केनापि कारणेनात्र भवितव्यम् Hir. 29, 19. गृध्रस्य मल्लोपस्तम्भात् 104, 6.

उपस्तम्भक (wie eben) adj. *stützend, fördernd, anregend* Sīmehjak. 13.

उपस्तम्भन (wie eben) n. *Stütze* TS. 6, 6, 8, 1. Çat. Br. 3, 3, 4, 25. Kāt. Çr. 2, 3, 14. 9, 2, 18.

उपस्तरण (von स्तर mit उप) n. 1) *das Hinstreuen, Besprengen*; *das Gestreute, Gesprengte*: मुक्राडुपस्तरणाभिधारणे (करोति) Kāt. Çr. 9, 9, 24. अमृतोपस्तरणमसि Āçv. Gṛh. 1, 24. — 2) *Decke*: उपस्तरणं चम्बोर्नभस्मयम् RV. 9, 69, 5. AV. 5, 19, 12. निवेशनं पुनर्नवीकृत्य लेपनात्स्तरणोपस्तरणीः Āçv. Gṛh. 2, 3. Kauç. 11. Kauç. Up. in Ind. St. 1, 402, 1.

उपस्तरे s. u. स्तर mit उप.

उपस्ति und उपस्तिर् (von अस्, अस्ति mit उप; vgl. अभिष्टि) m. *Untergebener, Gesindsmann*: तमुत्तमास्योषधे तव वृता उपस्तयः । उपस्तिरस्तु सोऽस्माकं यो अस्मा अभिदार्सति RV. 10, 97, 23. ebenso betont VS. 12, 101. dagegen oxyt. AV. 6, 15, 1. उपस्तीन्त्यर्षा मरुत्वं सर्वान्कण्वभितो जनान् 3, 5, 6. स्तोम स्तोमस्योपस्तिर्भवति धातव्यमेवोपस्तिं कुरुते TS. 7, 2, 5, 4.

उपस्तिर् (von स्तर mit उप) f. *das Hinstreuen, Hinbreiten*; *das Hingebreitete, Decke*: धारा पत्यसश्चतः । अभि मुक्रामुपस्तिर्म् RV. 9, 62, 28. हरिरापिषे कणुते नभस्यप उपस्तिरे चम्बोर्नभस्म निषिञ्जे 71, 1. वि यो नृधानं शमितेव चर्मापस्तिरे पृथिवी सूर्याप 5, 83, 1. स्तुपे यद्वा पृथिवि नव्यसा वचं स्यात्तुश्च वयस्त्रिवया उपस्तिरे 2, 31, 5. Vgl. auch स्तर mit उप.

उपस्तुत् (von स्तु mit उप) f. *Anrufung, Aufforderung*: चोदद्वाय उपस्तुतश्चिद्वार्क RV. 7, 27, 3. त्वं त्वमर्ह्यया उपस्तुतः पूर्वभिरिन्द्र हरिकेश पर्वभिः 10, 96, 5.

1. उपस्तुत s. u. स्तु mit उप.

2. उपस्तुतं (wie eben) m. N. pr. eines Rshi, auch im pl.: इति त्वामे वृष्टिर्ह्यस्य पुत्रा उपस्तुताम् ऋषयो ऽवाचन् RV. 10, 113, 9. 8. 1, 36, 10. 112, 15. 8, 92, 8. 5, 25.

उपस्तुति (wie eben) f. *Anruf, Preis*: उपस्तुतिं भरेमाणस्य करोः RV. 1, 148, 2. 138, 4. 190, 3. 4, 36, 5. सत्या नृणामन्त्रसदमुपस्तुतिः 7, 83, 7. 8, 1, 16. यस्तु आनृकुपस्तुतिम् 4, 6. 27, 11. 15. 31, 1. 59, 13. 73, 4. 10, 64, 11. 167, 3.

उपस्तुत्य (wie eben) adj. *zu preisen*: वर्षः RV. 1, 136, 2. उपस्तुत्यं महिं ज्ञातं तैर्धर्वन् 163, 1. उपस्तुत्या चिकितृषा सरस्वती 6, 61, 13.

उपस्त्री (उप + स्त्री) f. *Nebenfrau* ÇKDr.

उपस्थ 1) m. *Schooss*; bildlich für *Mitte* überhaupt und zur Bezeichnung eines sichern Ortes (namentlich häufig im loc. und abl.) H. 602. an. 3, 317. पितेव पुत्रमभिरूपस्थै RV. 10, 69, 10. यद्वा त्वयो मातृस्या उपस्थे 3, 8, 1. 6, 75, 4. भूम्याः 2, 14, 7. AV. 14, 1, 47. योः RV. 1, 103, 5. अपान् 144, 2. 6, 8, 4. 10, 8, 1. निर्गतेः 1, 117, 5. 10, 93, 14. 161, 2. 18, 10. पित्रोः 1, 31, 9. 146, 1. 183, 2. 7, 6, 6. उपस्थे विभूतो वसु 8, 40, 4. विश्वेयामृतानामुपस्थे 7, 3, 1. शर्मन्स्याम मृतानामुपस्थे 34, 25. अदितेः 9, 26, 1. 74, 5. 7, 88, 7. AV. 2, 28, 4. यस्या उपस्थं उर्वरं तर्त्तम् 7, 6, 4. VS. 1, 11. अर्बोधि तार उपसामुपस्थात् RV. 7, 9, 1. 63, 3. पर्वतानाम् 3, 33, 1. धिपणीयाः 10, 17, 12. अर्णसः 6, 62, 6. वि तिष्ठतो मातृस्या उपस्थानानात्रयाः पश्यो ज्ञायमानाः AV. 14, 2, 25. तिष्ठो यावः सवितुर्वा उपस्था एका यमस्य भुवने विरापाट् RV. 1, 33, 6. अग्रेषा पूषती पित्रोरुपस्था 124, 5. नेष्टुपस्थ आसीनः Ait. Br. 6, 3. Çāṅku. Gṛh. 8, 5, 4. उपस्थं कर्त्तुं einen Schooss bilden, sich mit angezogenen Beinen niedersetzen Ait. Br. 8, 9. Āçv. Gṛh. 3, 2. उपविशेत्तमस्तत्रेद्वाररत्नयो जानुभ्यामुपस्थं कृत्वा यथा शकुनिरुपतिष्यन्तु-